Prevalent Arari

आरती कीजै हुनमान लला की । दुष्टदलन रघुनाथ कला की । टेक।

जाके बल से गिरिवर काँपै । रोग-दोष जाके निकट न झाँपै ।।

अंजनि पुत्र महा बलदाई । संतन के प्रभु सदा सहाई ॥२॥

दे बीरा रघुनाथ पठाये । लंका जारि सीय सुधि लाये ।

लंक सो कोट समुद्र सी खाई । जात पवनसुत बार न लाई ।

लंका जारि असुर संहारे । सियारामजी के काज सँवारे ।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे । आनि सँजीवन प्रान उबारे ।

पैठि पताल तोरि जम-कारे । अहिरावन की भुजा उखारे ।

बायें भुजा असुर दल मारे । दहिने भुजा संतजन तारे ।

सुर नर मुनि आरती उतारे । जै जै जै हनुमान उचारे ।

कंचन थार कपूर लौ छाई । आरति करत अंजना माई ।

जो हनुमानजी की आरति गावै । बसि बैकुंठ परमपद पावै ।